मधुबन ओम् शान्ति अंक 327 अक्टूबर 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-09-19)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा शुभचिंतन में रह शुभचिंतक बनने वाली विश्व कल्याणकारी आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर बहुत अच्छी सेवाओं की धूम मचाई, जिसके समाचार मिलते रहे हैं। विशेष बरसात के दिनों में मधुबन बेहद घर में भी अनेकानेक भाई बहिनों ने स्व निरीक्षण योग तपस्या करके विशेष बहुत सुन्दर अलौकिक अनुभूतियां की। हर एक ने ब्रह्मा बाप समान बनने तथा परमात्म प्रत्यक्षता के लिए स्व परिवर्तन की प्रतिज्ञायें भी की।

आप सबके साथ मुझे तो भाग्य मिला है कि इस शरीर में बैठे एक सेकेण्ड भी मीठे बाबा के सिवाए दूसरा कोई संकल्प न आये। मनमनाभव और मध्याजीभव, यह शब्द सुनके या किसी को सुनाके हमें खुश नहीं होना है बल्कि उसकी गहराई में जाना है। चेक करना है कि कोई सूक्ष्म नकारात्मक चिंतन तो नहीं चलता है? क्योंकि स्वचिंतन से ही सबका भला होगा इसलिए बाबा कहते बच्चे तुम किसी की चिंता मत करो। बाबा मेरा साथी है और साक्षी होकरके हर दृश्य को देखना है तब त्यागमूर्त और तपस्वी मूर्त बन सकेंगे।

मीठे बाबा ने साकार वा अव्यक्त में इतना समय पार्ट बजाया और हम सबको सेवा में लगाया, अभी हर एक को त्याग वृत्ति से तपस्वी मूर्त बनना है। लाइट रहना है तो माइट अपने आप काम करेगी। एक बाप की लाइट और माइट के सिवाए बाकी किसको राइट नहीं है जो कोई मेरे नाम, रूप को देखे। न मैं किसी को अपने में फसाऊं, न किसी के नाम रूप को देख मैं फंस जाऊं, इसलिए मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। मेरी तो न यह देह है, न देह के सम्बन्धी हैं। नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। स्मृति ऐसी है, जो न फ्यूचर याद आता, न पास्ट याद आता। प्रेजेन्ट में प्रेजेन्ट रहना, यही मीठे बाबा की आज्ञा है। तो कोई भी पुरानी बात न याद है, न आने वाली बातों का फिकर है, बेफिकर रहने की बादशाही बाबा ने दी है।

हम बिजी नहीं हैं, पर इज़ी भी नहीं हैं। नियम और मर्यादाओं में बहुत पक्के हैं लेकिन इज़ी माना नेचर ऐसी हो जब भी बुलावा हो हाँ जी, जी हाँ। यह ऐसा मीठा बोल है, जब तक इस शरीर में आत्मा है, अगर शरीर छोड़े भी ना तो यह जहाँ भी होगी, घूमेगी फिरेगी कहाँ भी होगी लेकिन मैं कौन, मेरा कौन.. यही सोचेगी।

दिल में दिलाराम बैठा है, दिमाग में ड्रामा की नॉलेज बहुत अच्छी है। तो दिलाराम बाबा भी देख रहा है कि बच्ची के दिल में मेरे सिवाए कोई आ ही नहीं सकता। अहो प्रभू तेरी लीला वन्डरफुल है। जहाँ देखो बाबा आपके सिवाए कोई नज़र ही नहीं आता है। ड्रामा ने साक्षी होकरके शान्त में रहने का बहुत अच्छा भाग्य दिया है, इसमें ही बहुत मज़ा है। शान्त चित्त है और कोई चिंतन नहीं है... बाबा, अपने समान बनाने के बगैर रह भी नहीं सकता।

बाबा अभी हमारे से क्या चाहता है? संगमयुग छोटा युग है, इसमें कलियुग अन्दर न आ जाये। हम सतयुग में आने वाली आत्मायें बाबा के सामने बैठे हैं। बहुत खुशनसीब हैं जो बाबा के महावाक्य रोज़ाना मुरली में सुनते हैं, मनन चिंतन करते हैं। निश्चयबुद्धि विजयंती यह प्रैक्टिकल लाइफ है। दुआयें देने और दुआयें लेने की सेवा है। कोई भी बात का टेन्शन नहीं है। अल्फ और बे को याद करना है, बस। बेफिकर रहने की बादशाही है। जिसे कोई चिंता नहीं, चिंतन नहीं वह निश्चिंत रह सत चित्त स्वरूप का अनुभव करता है। सच्चाई है ज्ञान योग में। तो अपने चिंतन को देखो, कोई घड़ी भी किसके प्रति भी अपने लिये भी कोई व्यर्थ चिंतन वा चिंता न हो। बोलो, ऐसी ही स्थिति बनाने का अटेन्शन रहता है ना! अच्छा!

सभी को बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद.....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"सदा उत्सव भरा उत्सव मनाओ"

1) हर दिन आप ब्राह्मणों के लिए उत्साह-उमंग बढ़ाने वाला उत्सव है, इसलिए यादगार रूप में भी भारत में अनेक उत्सव मनाते हैं। तो सदा उमंग-उत्साह से हर दिन उत्सव मनाते रहो। खुशी में नाचते रहो और बाप के गुणों के गीत गाते रहो। उमंग-उत्साह–यही आपके लिए उड़ती कला के पंख हैं।

2) सदा उमंग-उत्साह में रहना और औरों को भी उत्साह में लाना यही ब्राह्मणों का आक्यूपेशन है। आप ब्राह्मणों के मुख से सदा उत्साह दिलाने वाले बोल ही निकलने चाहिए। भल कोई कैसी भी आत्मा हो आपका काम है सबको उत्साह भरी कहानी सुनाना, उत्साह की बातें सुनाना। वह रोता हो आप उसे उत्साह में नचा दो।

3) बापदादा बच्चों से यही शुभ आश रखते हैं कि बीती सो बीती कर, निगेटिव और वेस्ट दृष्टिकोण को समाप्त कर, स्नेह और शक्ति दो। उत्साह मिटाने वाली बातें होती हैं और भी होंगी लेकिन आप बच्चे सदा उत्साह में रहो और दूसरों को उत्साह दिलाओ।

4) जैसे लौकिक में माँ-बाप बच्चों को अपने हाथों पर नचाते रहते हैं अर्थात् सदा खुश रखते हैं, उमंग-उत्साह में रखते हैं। ऐसे आप सपूत बच्चे भी सदा सर्व को उमंग-उत्साह में नचाते रहो, उड़ती कला में उड़ाते रहो। सदा हर एक की विशेषता को देखो, कमजोरियों को नहीं। कमजोरी देखने से उमंग-उत्साह में अन्तर पड़ जाता है।

5) जैसे इस स्थूल शरीर में श्वाँस है तो जीवन है। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस है–सदा उमंग-उत्साह। जो सदा उमंग-उत्साह में रहते हैं, वो फ़लक से कहेंगे कि ब्राह्मण हैं ही उमंग-उत्साह के लिये। लेकिन जब कोई भी परिस्थिति में व्हाई (क्यों) शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है। इसलिए व्हाई के बजाए सदा वाह-वाह निकलता रहे।

6) सदा उमंग-उत्साह में रहना अर्थात् अपने श्रेष्ठ शान वा स्वमान में रहना। सदा इसी शान में रहो कि हम सदा खुश रहने वाले और दूसरों को खुशी बांटने वाले दाता के बच्चे हैं। सदा देने वाले हैं, लेने वाले नहीं।

7) कोई भी कार्य में सफलता प्राप्त करने का साधन है संगठित रूप में सबके शुभ संकल्प, उमंग-उत्साह के संकल्प। यह संकल्प असफलता को मिटा देता है। जैसे किला कमजोर तब होता है जब कोई एक भी ईट हिलती है। यदि सब ईटे मजबूत हैं तो किला कभी हिल नहीं सकता। तो संगठन में सबका उमंग-उत्साह और श्रेष्ठ संकल्प हो, सहयोग हो तो सफलता हुई पड़ी है। यदि किसी भी कार्य में उमंग-उत्साह नहीं है तो थकावट होगी और थका हुआ कभी सफल नहीं हो सकता।

8) सदा हर सेकेण्ड उमंग-उत्साह बढ़ता रहे तो एक दिन इस विश्व को उत्साह भरा अपना राज्य बना लेंगे इसलिए सदा हर एक में उत्साह भरना और दुआयें लेना। हर सेकेण्ड दुआयें लेते जाओ और दुआयें देते जाओ। आपकी दुआओं से सदा सर्व आत्मायें सुखी हो जायेंगी।

9) बाप आपके साथ कम्बाइन्ड है, इसलिए उमंग-उत्साह से बढ़ते चलो। कमजोरी, दिलशिकस्तपन बाप के हवाले कर दो, अपने पास नहीं रखो। अपने पास सिर्फ उमंग-उत्साह रखो। सदा उमंग-उत्साह में नाचते रहो, गाते रहो और ब्रह्मा भोजन करते रहो।

10) सदा उड़ती कला का अनुभव करने के लिए हिम्मत और उमंग-उत्साह निरन्तर बढ़ता रहे। उमंग-उत्साह ही उड़ने के पंख हैं। अगर पंख मज़बूत होंगे तो तीव्र गति से उड़ सकेंगे। सदा अपने चेहरे और चलन से औरों को भी उमंग दिलाते रहो। आपकी ऐसी चलन हो जो कोई भी देखे तो सोचे कि ये उमंग-उत्साह में सदा कैसे रहते हैं?

11) यह उमंग-उत्साह आप ब्राह्मणों के लिये बड़े से बड़ी शक्ति है। नीरस जीवन नहीं है। दुनिया वाले तो कहेंगे कि क्या करें, रस नहीं है, नीरस है, बेरस है और आप कहेंगे उमंग-उत्साह का रस है ही है। कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते, सदा दिल खुश। कैसी भी मुश्किल बात हो, लेकिन उमंग-उत्साह मुश्किल को सहज कर देता है। उत्साह तूफ़ान को भी तोहफ़ा बना देता है, पहाड़ को भी राई नहीं लेकिन रुई बना देता है। उत्साह किसी भी परीक्षा वा समस्या को मनोरंजन अनुभव कराता है। इसलिये कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिये।

12) सदा अपने को उमंग-उत्साह में लाओ। अपने आपसे रेस करो, दूसरे से नहीं। दिलशिकस्त कभी नहीं बनो क्योंकि अभी फिर भी जमा करने का समय है। अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। फाइनल रिजल्ट का टाइम अभी एनाउन्स नहीं हुआ है तो उमंग-उत्साह में आकरके दृढ़ संकल्प करो कि मुझे अपने जमा का खाता बढ़ाना ही है।

13) सदा दिल में यही उमंग-उत्साह रहे कि मुझे बाप समान समीप रत्न बन सदा सपूत बच्चे का सबूत देना है। यही उमंग-उत्साह उड़ती कला का आधार है। यह उमंग कई प्रकार के आने वाले विघ्नों को समाप्त कर सम्पन्न बनने में बहुत सहयोग देता है। यह उमंग का शुद्ध और दृढ़ संकल्प विजयी बनाने में विशेष शक्तिशाली शस्त्र बन जाता है।

14) सदा यह उमंग रहे कि मुझे बाप समान सर्व शक्तियों, सर्व गुणों, सर्व ज्ञान के खजानों में सम्पन्न होना ही है – क्योंकि कल्प

पहले भी मैं श्रेष्ठ आत्मा बना था। एक कल्प की तकदीर नहीं लेकिन अनेक बार के तकदीर की लकीर भाग्य विधाता द्वारा खींची हुई है। इसी उमंग के आधार पर उत्साह स्वत: बना रहेगा।

15) सदा इसी उमंग-उत्साह में रहो कि ''वाह मेरा भाग्य''। जो भी बापदादा ने भिन्न-भिन्न टाइटिल दिये हैं, उसी स्मृति स्वरूप में रहने से उत्साह अर्थात् खुशी स्वत: ही और सदा ही रहती है। सबसे बड़े ते बड़े उत्साह की बात है कि अनेक जन्म आपने बाप को ढूंढा लेकिन इस समय बाप दादा ने आपको ढूंढ लिया, इसी नशे और खुशी में सदा आगे बढ़ते चलो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 18-02-15 *मधुबन*

"बाबा है करावनहार, ड्रामा कहता है तुम करनहार बनो मैं सब अच्छे से अच्छा कराऊंगा"

दादी जानकी जी

ओम् शान्ति। एक गीत है ना - बाबा मैं तुम्हें देखता रहूँ, देखता रहूँ...। बाबा को देखने से, बाबा की सुनने से हर्षित होते हैं। ड्रामा की नॉलेज हमारी स्थिति को अडोल अचल स्थिर बनाती है। मेरे से किसी ने क्वेश्चन पूछा आप कुछ सोचती नहीं हो? मैंने देखा क्या सोचूँ? कल क्या हुआ? अच्छा हुआ, कल क्या होगा? अच्छा होगा। अभी क्या कर रहे हैं? देख रहे हो।

अपनी स्थिति वर्तमान समय कैसी हो? क्योंकि बाबा और ड्रामा। बाबा है करावनहार, ड्रामा कहता है तुम करनहार बनो मैं कराऊंगा। मैंने देखा इस सीज़न में 65 देशों से फॉरेनर्स भाई बहनें आये हैं, तो यह बाबा की कमाल है या ड्रामा की? ड्रामा की यह सीन देख दिल कहता है, वाह बाबा वाह आपके बच्चे वाह! बाबा के चरित्र विचित्र हैं जो हमारे सामने हैं। 79 वर्षों से बाबा के चरित्र देख रहे हैं। कितने पदमापदम भाग्यशाली हैं। गुल्जार दादी द्वारा जब बाबा की मुरली चलती है तो हर समय बापदादा, बापदादा शब्द कानों में गूंजता है। हम जब भी बात करेंगे तो बाबा बाबा कहेंगे। बापदादा नहीं कहते हैं, क्योंकि उस समय गुल्जार दादी खुद नहीं है। हम जब बाबा कहते हैं तो साकार, निराकार, अव्यक्त तीनों इकट्ठे दिखाई पड़ते हैं। आप 2 मिनट बाबा को सामने देखो, तो साकार अव्यक्त और निराकारी भासना आती है। भले पैदा पीछे हुए हैं पर साकार बाबा को देख निराकारी स्थिति से अव्यक्त दिखाई पड़ता है। यह बाबा ने ही त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों का मालिक बनाया है। बाबा अभी भी सूक्ष्मवतन में रहता है ना, अगर बाबा मूलवतन में चला जाता तो यह अव्यक्त पार्ट कैसे चलता? तो सूक्ष्मवतन वन्डरफुल है क्योंकि मूलवतन में कोई एक्टिविटी नहीं है। सब युगों में यह युग वा यह समय कितना महान है, जो अभी बाबा की एक्टिविटी चलती है।

संगमयुग में शिवबाबा पहले साकार ब्रह्मा बाबा में प्रवेश हुआ। ब्रह्मा बाबा हर मुरली में थोड़ा अपना पहले का कॉन्ट्रास्ट सुनाता है। मैंने बाबा को गीता पढ़ते हुए देखा है, बाबा गीता पाठ करते साइलेन्स में चला जाता था। कलकत्ते में बड़ के झाड़ के नीचे सुबह को बाबा 10 बजे से शान्त में बैठा रहता था। बनियंट्री का नॉलेज वन्डरफुल है। फाउण्डेशन है ही नहीं, अभी हम बेहद बनियंट्री के नीचे बैठे हैं, सारा झाड़ कितना बड़ा फैला हुआ है। अभी बीज़ की सन्तान हैं, पक्के ब्राह्मण है फिर ब्राह्मण सो फरिश्ता, यह फरिश्ते पन की स्थिति भी वन्डरफुल है। अभी हम कौन-सी स्थिति में है?

मेरा यह जो 3 बारी ओम् शान्ति है वो हर एक को अनुभव हो जाए। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा का बच्चा हूँ, मुझे क्या करने का है? यह बहुत अच्छा है, मैं कौन हूँ? पहले अपनी पहचान हो। मेरा कौन? उसकी पहचान से चल उड़ जा रे पंछी..., यह देश हुआ बेगाना...।

मुख्य बात अन्दर मनोवृत्ति को चेक करो कितनी अच्छी हो गई है और कोई चिंतन नहीं है। मन में भगवान का चिंतन आ गया, मन मनमनाभव होने लगे। सागर का ज्ञान मिलता है, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर... वो मंथन कर उसकी गहराई में जाओ तो नया संसार, नई दुनिया जो आ रही है वो दिखाई पड़ रही है। उसमें अनासक्त वृत्ति उपराम वृत्ति हो, कोई आसक्ति नहीं।

अभी मैं आप सबको देख रही हूँ ज्ञान है मैं कौन? मेरा कौन? योग, धारणा, सेवा चारों सबजेक्ट में अच्छा है। मैं समझती हूँ, अलबेलापन सबका छूट गया। पुराने जमाने में रात को चौकीदार सावधान रहो, खबरदार रहो, होशियार रहो.. ऐसे आवाज़ से कहते थे। अभी नहीं करते हैं। साइलेंस में अन्दर बाहर दोनों से सावधानी रखते हैं। तो बाबा का कहना और हमारा मानना बहुत सहज है। अन्त में बाबा ने रात्रि क्लास में जो शब्द उच्चारण किये वो बहुत-बहुत छाप लगाई है। निराकारी स्थिति से निर्विकारी बन जायेंगे। कौन अनुभव करते हैं, किसको अनुभव हैं? निराकारी में साकार भी आ गया माना जैसे साकार निर्विकारी रूप में देखा और निरहंकारी भी। ऐसे हम बच्चे भी ऐसी स्थिति का कलम लगा रहे हैं सिर्फ व्हाइट कपड़े नहीं पहने हैं बल्कि सफेद कपड़े के साथ जो देखेंगे वो राइट।

बाबा की तीन बातें तन मन धन सब समर्पण। शिवबाबा के आते ही तन मन धन समर्पण। फिर मन वाणी कर्म बाबा को सामने देखो। मन हमारा मनमनाभव करा दिया है। वाणी, कर्म के साथ सारा दिन रात श्वाँस, संकल्प, समय सफल करना है। कुछ भी निष्फल न जाये। ओम शान्ति।

दूसरा क्लास 25-2-15

"ज्ञान योग धारणा और सेवा, चारों सबजेक्ट की गहराई में जाओ और फुल मार्क्स लो तो पास विद ऑनर बन जायेंगे"

मैं कौन? यह समझा तो आत्म-अभिमानी हो गये। मेरा कौन कहा तो शक्तिशाली हो गये। एक ही शक्ति, दूसरी है एनर्जी तीसरा है बल। योगबल कहेंगे। जितना योग अच्छा है माना बाबा से कनेक्शन अच्छा है, सर्व सम्बन्ध बाबा के साथ हैं तो इस शरीर में होते हुए भी इस शरीर से न्यारे हैं। जितना न्यारे हैं उतना बाबा के प्यारे हैं। अगर न्यारे नहीं होते हैं तो बाबा का प्यार अनुभव नहीं होता। बाबा ने बचपन से अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। हम बाबा के हैं, बाबा हमारा है। ड्रामा अनुसार सर्व सम्बन्ध एक के साथ। यह एक सोचने की बात है, प्रैक्टिकल है। माता-पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू। जब बाबा को माता के रूप में देखो तो प्यार मिलता है। पिता के रूप में देखो जैसे वर्सा दे रहा है मुक्ति जीवनमुक्ति का। वर्से में मुक्ति है जो कुछ गलतियां की हैं उन सबसे, बाबा ने अपना बनाके वह सब माफ कर दिया। और हमको कहा जो कुछ पास्ट हुआ भूल जा, एक मेरे को याद करो। फिर सतगुरू के रूप से श्रीमत सिरमाथे पर। कई भाई-बहनें मिलते हैं तो कहते हैं ऐसे सिर पर हाथ रखो। कई नये आते हैं उनके लिए नई बात कहेंगे क्योंकि उन्होंने दुनिया में न ऐसा स्थान देखा, न ऐसा व्यक्ति देखा। हम सब बाबा को फॉलो करके एक समान हो गये हैं।

जब आई लव यू कहते हैं, तो दिल का शेप दिखाते हैं। भगवान का प्यार और हमारा आपस में बहुत प्यार है। शरीर में आत्मा है, शरीर में मुख्य स्थान है दिल और दिमाग का। दिल में पुरानी दुनिया से त्याग है तो बाबा से बहुत शक्ति मिलती है। मैं बाबा की सकाश से बोल रही हूँ, मुझे साकार अव्यक्त निराकार तीनों ही इकट्ठे दिखाई पड़ते हैं। जब साकार में बाबा रहता था तो अव्यक्त रहता था, बहुत ही शान्ति की स्थिति होती थी। एक बारी साकार में बाबा भोजन कर रहे थे, तो मैंने एक आत्मा के लिए बाबा को कहा बाबा यह भी आपके साथ भोजन करे, तो बाबा ने कहा तुम कहती हो तो भले बिठाओ। जब वो भोजन करके चला गया तो बाबा ने मुझे बुलाया और मेरे से पूछा कि उसने पहचाना कि मैंने किसके साथ बैठ भोजन किया? तो बाबा को सही अर्थ में जानना, मानना, पहचानना तभी हमारे जीवन में परिवर्तन आता है।

स्थूलवतन में होते हुए भी मूलवतन में जाना है और सूक्ष्मवतन में रहना है। अभी मुझे तो यह भासना आती है परन्तु साकार में होते हुए स्थूल वा इस व्यक्त वतन में नहीं रहना है। तो सूक्ष्मवतन में रहने से ऑटोमेटिक श्रीमत चला रही है, मनमत परमत से फ्री हैं। संगमयुग पर बुद्धियोग बल से चलना है, बुद्धियोग बल से काम करना है। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा करता है खुद, कराता है हमारे से। आजकल जब मुरली पढ़ती हूँ तो मुझे खुशी होती है, जो मुरली में डायरेक्शन हैं उसी अनुसार सारे विश्व में सब सेवायें हुई हैं। सारे विश्व में बाबा कैसा है, क्या करता है, क्या कराता है, वह साक्षी होकर देख रहे हैं क्योंकि हम यह नहीं कह सकते हैं मैं कर रही हूँ या मुझे करना है, वो करा रहा है। आगे चल करके क्या कराना है, वो जाने ड्रामा जाने पर मेरी प्रालब्ध बनाने के लिए बाबा सिखाता है तुमको क्या करना है। यह क्या करता है, यह क्या करता है...। आज साक्षी हो करके आप सभी को देख कहेंगे डबल विदेशी पर स्व देश में रहने वाले हैं, हम सबका देश शान्तिधाम है। वहाँ जाने के लिए अभी यहाँ हम आप सब बैठे हैं। अभी तक मुरली में जो सुना है, जो मुरली पढ़ी है वो सारी बातें मेरी लाइफ में हैं। बाबा मुरली मधुबन सखी रे मैंने पायो तीन रतन। जहाँ बाबा और मुरली है वहाँ मधुबन है। साकार में मधुबन निवासी हैं, अव्यक्त में सूक्ष्मवतनवासी हैं। यह बोलना नहीं होता है, चलन अति स्वच्छ शक्तिशाली प्रेरणा देने वाली हो।

ब्रह्मा द्वारा मुख से ब्राह्मण बने हैं, कभी उदास चेहरा न हो, यह श्रृंगार है। अटेन्शन इतना अच्छा हो जो कभी टेन्शन न हो। ऐसे अपने आपको चेक करना और चेंज करते रहना और चेंज करते-करते सर्व गुणों में सम्पन्न बनें। गुण कौन-से हैं, अवगुण कैसे हैं? वह बोल-चाल में दिखाई पड़ते हैं। बोलने और चलने में बाबा को देखो वन्डरफुल है। कहता है मैं नहीं करता सिर्फ यह शिक्षा देता है, धारणा करो। चारों सब्जेक्ट में ज्ञान योग धारणा सेवा चारों की गहराई में जाओ, फुल मार्क्स लो। ज्ञान है आत्मा, परमात्मा और ड्रामा का, झाड़ का। बीज़ से पहले हम निकले हैं फिर फाउण्डेशन हम बीज की सन्तान हैं। जैसा बीज वैसा फल। हम अगर आम का बीज धरती में डालेंगे तो आम मिलेगा। सबसे अच्छा फल है आम और गुलाब का फूल सबसे सुन्दर फूल है। इस बगीचे में भी वैरायटी फूलों से गुलदस्ता बना हुआ है। हर एक की अपनी विशेषता है। इशारों से समझते हैं, बोलना नहीं पड़ता है क्योंकि मुख वंशावली हैं।

एक बारी बाबा को किसी ने कहा बाबा सतयुग में आखिर बच्चा ऐसे ही पैदा होगा ना, जैसे अभी होता है। तो बाबा ने ऐसी आँख दिखाई है अरे, योगबल का पता नहीं है। जब योगबल से सारी नई दुनिया बन रही है तो क्या बच्चे योगबल से नहीं हो सकते! और योग किसके साथ है? उन दिनों में तो बाबा के क्लास में 100 के लगभग होते थे, परन्तु वायुमण्डल बहुत पावरफुल होता था। ऐसे वायुमण्डल में रहना और जो आवे, मिले वायुमण्डल से कैच करे, जो बाबा की नॉलेज है सिर्फ लिखने पढ़ने से नहीं मिलती है इसलिए बाबा ने मुरली में कहा नोट्स लेना चाहिए! तो एक बार मैं ऐसे नोटस ले रही थी, तो बाबा

ने कहा यह क्या कर रही हो? सामने बैठ शक्ति खींचो। तभी से मेरे हाथ में कॉपी पेन्सिल नहीं है, फ्री हूँ। बाकी मैगजीन जरुर पढ़ेंगी, ज्ञानामृत भी वन्डरफुल होती है, ऐसी अच्छी होती है इसलिए मैं कैसे भी करके वो जरुर पढ़ती हूँ। इतनी अच्छी अच्छी बातें, भले कोई लिखके भेजता है, पर मैगजीन बनाने तैयार करने वाले वन्डरफुल है। मैंने कोई भी मैगजीन मिस नहीं की है। अभी जब मैं, मैं, मैं कह रही हूँ, तो अच्छा है यह कहना? बताओ। पुरुषार्थ में मोहब्बत भले हो, मेहनत न हो। मेहनत करने से कभी थक जाते हैं और मेरे से कोई पूछते हैं तुम्हें एनर्जी कहाँ से आती है? टाइम, मनी, एनर्जी को सम्भाल के यूज़ की है, यह है संगमयुग की विशेषता।

यह भी ड्रामा अनुसार कल्प पहले इस टाइम यहाँ आपसे मिली थी, अभी भी मिल रही हूँ फिर कल्प बाद ऐसे मिलेंगे। कोई कोई को बाकी सब बातें समझ में आ गयी, पर 5 हजार वर्ष का यह कल्प है, यह समझ में नहीं आता। अभी यहाँ भी हमको ज्ञान ऐसा समझा हुआ हो, कल्प पहले भी हुआ था, अभी भी हो रहा है क्योंकि कल्प 5 हजार वर्ष का है परन्तु ड्रामा कब शुरू हुआ था? यह अनादि अविनाशी है, यह बाबा के जो बोल हैं, उसमें निश्चय बुद्धि विजयंती हैं। अनादि बना बनाया ड्रामा है, फिर से रिपीट हो रहा है। कब तक रिपीट होगा? क्या यह सीन सतयुग ला रही है? इस समय सतयुग में आने के संस्कार बना रहे हैं और आपस में हम आत्माओं की डिटैच और लविंग नेचर बन रही है जो सतयुग में होगी। जैसा अन्न वैसा मन प्रैक्टिकल देखा है। बनाने वाले, खिलाने वाले, खाने वाले.. सतयुगी संसार हम बना रहे हैं। आत्माओं का ज्ञान, परमात्मा का ज्ञान, ड्रामा का ज्ञान और धारणा में समझ आई, योग लगा, उनसे जो बल मिला तो राइट क्या है, रांग क्या है? पाप क्या है, पुण्य क्या है? ऑटोमेटिक धारणा होती जाए, कोई मेरे से गलती न हो जो धर्मराज आँख दिखाये। बाबा भले कहता है मैं सजा नहीं देता हूँ, माफ करता हूँ परन्तु जो सजा मिलती है तो बाबा कहता है तुम ऐसा कर्म करते हो जो सौ अच्छे कर्म किये हुए भी एक विकर्म सारा खाता खलास कर देता है, इसलिए बहुत ध्यान रखना है। सारा ज्ञान है ध्यान रखने का, योग का बल चला रहा है।

मुख्य बात है मैं कोई स्वभाव के वश न हो जाऊं, मुझे नाज़ुक नेचर वाला नहीं बनना है। कोई ऐसा है तो वो भी मजबूत बन जाए। मुस्कराने में कोई भी मुश्किल नहीं लगती है। इतना सारा यज्ञ कैसे चलता है, वन्डर है परन्तु सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हिम्मत बच्चे की मदद बाप की है। आपस में तू मैं नहीं है, तेरा मेरा नहीं है, हम सब बाबा के हैं, सभी एक ही पुरुषार्थ कर रहे हैं ना याद में रहने का। सेवा भी क्या है? जितना याद में रहो तो ऑटोमेटिक सेवा है। शान्त रहने में भी सेवा, तो कुछ बोलने में भी सेवा समाई हुई है। चारों सब्जेक्ट में अच्छा अटेन्शन रखने से पास विथ ऑनर में आयेंगे। यह भी पुरुषार्थ में लक्ष्य हो, मुझे पास विथ ऑनर में आना है।

दो आत्मायें भी एक जैसी नहीं हो सकती, यहाँ जो भी बैठे हैं, दो एक जैसे नहीं हैं। तो मैं ऐसे क्यों देखूँ कि यह ऐसा है, यह वैसा है? परन्तु सब एक हैं, एक के हैं, एक ही घर में बैठे हैं, यहाँ तो सबका एक ही घर है। जहाँ भी होंगे, जो भी सारे विश्व में बाबा के घर बने हैं, वहाँ मधुबन जैसा वायुमण्डल बनायेंगे। तो एक है वातावरण, उनसे बनता है वायुमण्डल, फिर उसके वायब्रेशन सब जगह जाते हैं। जिस तरह बोल-चाल है वायुमण्डल ऐसा बनता है। अभी जैसे सभी का अटेन्शन सुनने में है, पर उठेंगे तो भी आवाज़ में नहीं आओ, जरुरत नहीं है। बोल और चाल-चलन फरिश्तों जैसी हो। फरिश्ता हम ही तो बनेंगे। अच्छा।

तीसरा क्लास 26-2-15

"ब्रह्मा बाबा जैसा त्यागी तपस्वी सेवाधारी बनना यही हमारे पुरुषार्थ का लक्ष्य और स्वरूप हो"

ओम् शान्ति। अटेन्शन खिंचवाने के लिए न इधर देखो, न उधर देखो, न पीछे देखो, न आगे देखो। कहते हैं इन्सान हैं ना, वो तो इधर देखेगा उधर देखेगा। चलो, आगे देखेगा पीछे देखेगा, इसलिए देखना सुनना कुछ बोलना, ज्यादा कान काम करते हैं या आँखें काम करती है या मुख करता है? झुटका खाना होगा तो आँखों से ऐसे ऐसे करेंगे, नहीं तो आँखें... मुझे एक सीन याद आई, आँखें खोलके याद में बैठने के लिए बहुत साल पहले बाबा ने सिखाया था। शिवबाबा ब्रह्माबाबा भी पहले पता नहीं था, सिर्फ बाबा ही जानते थे, बाबा ही कहते थे क्योंकि बाबा में लाइट दिखाई पड़ती थी। बाबा जो बोलता था, बहुत अच्छा लगता था।

अव्यक्त बाबा भी वन्डरफुल है। जब मैं बाबा के पास पहले हैदराबाद, कराची सिन्ध में आई तो बाबा चक्र, स्वास्तिका निकाल रहा था, जिसमें सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर, कलियुग ऐसे बताया गया लेकिन संगमयुग नहीं बनाया था। फिर मुरली शुरू की कलियुग अधर्म का नाश, सत्धर्म की स्थापना हो रही है। गीता में भी पढ़ते थे।

आजकल बाबा भक्तिमार्ग की भी बातें मुरली में सुनाता है। उसमें भी आत्मा परमात्मा बिछड़े बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया सतगुरू मिला दलाल, कोई दलाल होते हैं ना, वो अपने दलाली से ही बड़े साहूकार बन जाते हैं। ब्रह्मा बाबा दलाल बना है निमित्त, ऐसी उसमें आकर्षण है तो कहते थे यह जादूगर है। मुरली तेरी में है जादू, तो मुरली में जादू है यानी ईश्वरीय आकर्षण है, मुरली इतनी अच्छी है जो और कुछ सुनने का जी नहीं चाहता है। कोई सुनावे ना, तो भी लगता है क्या सुनूँ! कोई कहते कुछ बोलो, तो भी लगता है कि क्या बोलूँ! अगर मुरली के कोई शब्द प्यार से सुना, विचार किया, अन्दर मन शान्त, बुद्धि क्या सोचे, मन तो

शान्त हो गया। बुद्धि सोचने में लग जाए तो सोचती हूँ क्या सोचूँ, कल क्या होगा? कल क्या हुआ? जो हुआ सो अच्छा। जो होगा सो अच्छा। वर्तमान में हमको बड़ा प्रेजेन्ट रहना है ऐसा रहना है जिसमें भगवान ने हमें यह प्रेजेंट दिया है। प्रेजेन्ट में बाबा के आगे हाज़िर रहना, यह एक खुशी की बात है, आदि से ले करके जो भी सेवायें हुई हैं, बाबा के इशारे से, खींच से जैसे बाबा खींच रहा है, बाबा के सामने गई जनक यह करो। बाबा का बहुत बहुत शुक्रिया है कि मैं बाबा का आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार, फरमानबरदार हूँ। बाबा जो कहते हैं वो मानते हैं क्योंकि कौन कह रहा है? क्या सिखा रहा है? तो अभी सब चेक करो एक से सर्व सम्बन्ध हैं? देह का कोई सम्बन्ध देहधारियों के साथ तो नहीं है? मैं आत्मा हूँ देह से न्यारी हूँ तो परमात्मा की प्यारी हो गई। परमात्मा की प्यारी होने से कारोबार में इमानदार और सम्बन्धों में वफादार हूँ। एक रूपया भी, एक पेनी भी व्यर्थ नहीं गया है क्योंकि बाबा ने यज्ञ में सब समर्पण कर दिया। जबसे यज्ञ रचा तब से हम लोग यज्ञ का खा रहे हैं।

ऐसा कौन है जिसने अहंकार को मारा है, अभिमान को छोड़ा है, देह के भान से परे रहता है? मैं थोड़ी गोरी हूँ, यह थोड़ी सांवरी है, मैं पढ़ी लिखी हूँ, मेरा सेन्टर अच्छा है, मैं मेरा में पता चलता है। तो टोटल देह-अभिमान से परे रहना है।

त्याग, तपस्या, सेवा में सभी नम्बरवन हो जाओ। अभी समय थोड़ा है, सभी आज्ञाकारी, वफादार बन जाओ तो न सिर्फ भाग्यशाली पर पदमापदम भाग्यशाली बन जायेंगे। कौन हैं जो समझते हैं हम पदमापदम भाग्यशाली हैं? पदमापदम भाग्यशाली माना हर कदम में पदमों की कमाई हो। ऐसे साधारण कर्म नहीं। बोल और चाल-चलन दोनों ऐसे हो जो आज ब्राह्मण हूँ कल फरिश्ता जैसे बनने के चिन्ह आ रहे हैं।

मेरे पुरुषार्थ का लक्ष्य वा स्वरूप ब्रह्माबाबा जैसे त्यागी तपस्वी सेवाधारी का हो। ऐसे सम्पूर्ण त्यागी कौन हैं हाथ उठाओ। त्याग से तपस्या स्वत: होती है। अभी समय थोड़ा है कोई घड़ी भी विनाश आया कि आया। सब जलमई हो जायेंगे। क्वेश्चन नहीं है कि आखिर क्या होगा? 5 तत्वों से पार जाना है, 5 तत्वों का शरीर है, 5 तत्वों की दुनिया है, यह 5 यह तत्वों के बने हुए हैं। विनाश भी क्या होगा? यह 5 तत्व सतोप्रधान के बदले तमोप्रधान बन गये उनको सतोप्रधान बनाना है। यह शरीर वही है 5 तत्वों का, पर रहते पार हैं। आत्मा के अन्दर सच्ची दिल है, साहेब राज़ी है तभी यह आत्मा भृकुटी में चमकती है। हिम्मत हो, उमंग उत्साह न हो तो बाबा मदद कैसे करे! तो समझती हूँ बाबा की मदद 100 गुना है, हमारा पुरुषार्थ 1 गुना है। तो जितनी बाबा की मदद मिली है सच्ची दिल पर मिली है। बाकी पढ़ी लिखी नहीं हूँ, हाँ हेल्दी माइंड है, बॉडी हेल्दी नहीं है। न हेल्थ है, न वेल्थ है, पर हैपीनेस है। तीनों जरूरी हैं। अपने को सेवाधारी समझना है, मुझे कुछ नहीं चाहिए, न मान चाहिए, न शान चाहिए, न गद्दी चाहिए फिर क्या चाहिए? पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता, मधुरता।

एक दिन मैंने प्रकाश स्तम्भ पर चक्र लगाया तो वहाँ दादी जी के लिए बाबा ने जो महावाक्य उच्चारण किये हैं वह लिखे थे, मैंने पढ़े, स्वमान में रहना है सम्मान देना है। यहाँ टॉवर ऑफ पीस, नीचे प्रकाश स्तम्भ। नीचे शान्तिवन वालों के साथ क्लास में रूहरिहान करके फिर बाबा के कमरे में गयी। बहुत खैंच हुई। तो सभी अपने से प्रॉमिस करो मैं आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार, फरमानबरदार बाबा का बच्चा बनकर रहूंगा... तो नयनों का नूर बन जायेंगे। बाबा कहते हैं नूरे रत्न बापदादा का यादप्यार स्वीकार हो। भगवान कहे नूरे रत्न, सिन्ध में पत्र में लिखने का रिवाज़ था नूरे चष्म बेटा! इतना प्यार बाबा ने दिया है। मैंने ऐसे दिलाराम के साथ शादी किया है, बेटा है सुख, शान्ति है बेटी, यह मेरा छोटा परिवार है। अच्छा।

"स्व-स्थिति श्रेष्ठ बनानी है तो सर्वशक्तियों को समय पर कार्य में लगाओ"

(गुल्जार दादी जी 14-11-05)

बाबा ने हमें यही शिक्षा दी है कि बच्चे तुम्हारा कहना और करना समान हो। चलते फिरते हमारी ट्रेड मार्क ही ओम् शान्ति है। तो ओम् शान्ति शब्द जब भी कहते हैं उस समय उस स्वरूप में स्थित हो जाएं। यही बाबा की हम सब बच्चों के प्रति शिक्षा भी है और प्यार भी है क्योंकि बाबा यही चाहता है कि मेरा एक एक बच्चा राजा बच्चा बनें। अज्ञानकाल में भी ऐसे सोचते कहते हैं लेकिन कोई राजा बनता नहीं है। और बाबा ने हम हरेक को इस समय ही स्वराज्य अधिकारी बना दिया है। तो सभी राजे हो या परवश हो जाते हो? क्योंकि हम सर्वशक्तिवान बाबा के बच्चे हैं तो बाबा की जो प्रॉपर्टी है वो है ही सर्वशक्तियाँ, तो हमारी जायदाद हैं, जन्मसिद्ध अधिकार है। वो हम बच्चों को ही प्राप्त हैं। हमें यह ईश्वरीय नशा रहता है कि हमारा बाबा सर्वशक्तिवान है और हम उन सर्वशक्तियों के बालक सो मालिक हैं। यह नशा सदा रहता है या कभी-कभी रहता है?

अभी हम ऐसे ऊंचे बेहद बाबा के बच्चे तो बन गये लेकिन यह चेक करना है कि जो हमको बाबा ने जन्मसिद्ध अधिकार दिया है वो हमने प्रैक्टिकल लाइफ में यूज़ किया है? क्योंकि हम सभी बच्चों को बाबा ने कहा है कि विश्व का कल्याण करना है, तो जो शक्तियां बाबा से मिली हैं वो औरों को भी बाँटनी हैं। तो जायदाद सम्भालने का भी अक्ल होना चाहिए। तो हम कितना बाबा की जायदाद को अपना बना करके स्व प्रति और विश्व प्रति कार्य में लगा रहे हैं? अगर हम कार्य में लगाते हैं तो हमको मेहनत नहीं करनी पड़ती है। योग टूट जाता है फिर जोड़ना, अभी-अभी योगी होंगे, अभी-अभी थोड़ा

कम हो जायेंगे, उसकी जरुरत ही नहीं है क्योंकि हम अपने प्रति भी यूज़ कर रहे हैं और दूसरों को भी दे रहे हैं तो बिजी हो गये ना। टेन्शन हमेशा मन में होता है। और हमारे बाबा को भी क्या चाहिए? मन। मन, मनमनाभव है तो बाबा के मिलन का अनुभव कर सकते हैं। तो बाबा देखता रहता है कि मेरा एक एक बच्चा मन को इसी कार्य में लगाता है? और स्व स्थिति हमारी तब बन सकती है जब बाबा ने जो सर्वशक्तियाँ दी हैं वो समय पर काम में आयें। याद तो रहती हैं लेकिन यह चेक करें कि शक्तियों का ज्ञान आ गया है लेकिन जिस समय चाहिए उस समय वो शक्ति हम यूज़ कर सकते हैं? वो शक्ति काम में लगती है? क्योंकि अगर शक्तियां समय पर यूज़ न हो तो किस काम की?

तो शक्तियों के हम मालिक हैं तो ये हमारे ऑर्डर में होनी चाहिए। तो बाबा कहते हैं हे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे! आप मालिक होके जिस शक्ति की आवश्यकता है उन शक्तियों को ऑर्डर करो। जैसे जहाँ सहनशक्ति है वहाँ क्रोध नहीं आयेगा। बाबा कहते हैं सहनशक्ति धारण कर लो तो क्रोध का नाम-निशान ही नहीं रहेगा। क्रोध है धुआँ और क्रोध नहीं है तो दुआ। तो धुआँ नहीं निकालना है लेकिन दुआ देनी है। दुआ दो और दुआ लो। दु:ख दो भी नहीं और लो भी नहीं। जो दु:ख लेगा नहीं वो दु:ख देगा भी नहीं। तो किसी भी बात में फीलिंग आना माना फेल होना। जो घड़ी-घड़ी फेल होगा वो लास्ट में क्या पास होगा? तो पहले अपने ऊपर रहम करो क्योंकि बाबा कहते हैं तुम्हारे जड़ चित्रों से भी दुआयें मांगते हैं और आप चैतन्य वही ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनने वाले हो। तो अभी आपका कितना मर्सीफुल स्वरूप होना चाहिए।

इस ब्राह्मण जीवन की बहुत विशेषतायें हैं। चलो, सतयुग में हम देवता बन जायेंगे, हमारा राज्य हो जायेगा लेकिन शिवबाबा नहीं होगा, अभी तो बापदादा दोनों हमारे साथ हैं। और जैसे अभी हमारे ब्राह्मण जीवन में अनुभव होता है, कल दु:खी थे, आज सुखी हो गये। कल विकारी थे, आज निर्विकारी हो गये। दु:ख क्या है सुख क्या है, दोनों का कान्ट्रास्ट पता है और वहाँ तो दु:ख का नाम-निशान ही नहीं होगा। सभी सुखी होंगे। अभी हम नॉलेजफुल हैं, सारे चक्र की नॉलेज अभी ब्राह्मण जीवन में इमर्ज है, वहाँ मर्ज हो जायेगी। (ट्रैफिक कन्ट्रोल का गीत बजा)

अभी कौन-सी ट्रॉफिक को कन्ट्रोल किया? व्यर्थ संकल्पों की ट्रॉफिक को कन्ट्रोल किया? क्योंकि देखा जाता है कि कई भाई बहनें कहते हैं कि अभी खराब संकल्प तो नहीं चलते हैं लेकिन व्यर्थ चल जाते हैं। तो व्यर्थ संकल्प जो चलते हैं उसको मिटाने की युक्ति बहुत इजी है। अगर आपको ज्ञान मनन करना आता है तो व्यर्थ थॉट्स सहज खत्म हो जायेंगे। और मनन क्या करना है? रोज़ की हमारे बाबा की मीठी-मीठी मुरली। बाबा क्यों कहता है कि बच्चे मुरली मिस नहीं करो। अगर हो सकता है तो सवेरे का क्लास जरूर करो। अमृतवेला तो हमारा फाउण्डेशन है क्योंकि सारे दिन का आरम्भ होता है। अमृतवेला तो कोई भी ब्राह्मण कुछ बहाना नहीं दे सकता है। अपना ही टाइम है। यह मुरली जो है यही शुद्ध संकल्पों का खजाना है। और संकल्प - संकल्प को खत्म कर सकता है। अगर व्यर्थ संकल्प आता भी है तो मुरली की प्वॉइन्ट आपके अटेन्शन में होगी और उसी को स्मृति में लाके मनन करेंगे तो आपका मन उसमें बिजी हो जायेगा। तो जो पहले व्यर्थ संकल्प का फोर्स होगा वो खत्म हो जायेगा। जैसे यहाँ अन्धकार हो जाए तो स्वीच ऑन करने से रोशनी हो जाती है ना। ऐसे यह शुद्ध संकल्पों की स्मृति व्यर्थ को खत्म कर देती है।

मुरली सुनने के बाद फिर जब कामकाज में जाते हैं तो कहते हैं कर्म-कान्सेस हो जाते हैं और कुछ संकल्प नहीं चलता लेकिन जो काम करते हैं उसी के ही संकल्प में रहते हैं, लेकिन हमको तो बाबा ने कहा है तुम सिर्फ कर्म नहीं करो, कर्म के साथ योग भी हो इसके लिए कर्मयोगी बनके कर्म करो। हम सिर्फ कर्म नहीं कर सकते हैं लेकिन योगी बन करके कर्म करें। बाबा ने हमारा टाइटल कर्मयोगी रखा है, सिर्फ कर्म करने वाले नहीं। तो योग माना याद। मन में कोई न कोई याद तो रहती ही है, सिवाए याद के मन रहता नहीं है। तो कर्म करो लेकिन कर्म कराने वाली मैं आत्मा हूँ, यह याद रहे। कर्म करते अपना मालिकपन न भूले। कराने वाला डायरेक्टर अच्छा होगा तो वर्कर जो हैं वो और ही अच्छी तरह से काम करते हैं। अगर हमको याद रहे मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ तो इस स्मृति से कर्मेन्द्रियाँ धोखा नहीं देंगी। आत्मा को परमात्मा स्वत: ही याद आयेगा। यह देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थ यह सभी देह के साथ हैं लेकिन आत्मा के लिए सिवाए परमात्मा के और कोई नहीं है। तो करावनहार होके कर्म करो इसको कहते हैं कर्मयोगी।

यह निरन्तर भी हो सकता है सिर्फ बीच-बीच में चेकिंग करो, ऐसे नहीं रात्रि को पोतामेल देखो। कम-से-कम सारे दिन में 10 वारी चेकिंग जरूर करो। 5 बारी ट्राफिक कन्ट्रोल के समय फिर 5 बारी खाने-पीने के समय। ऐसे बीच-बीच में चेक करने से अपने को चेन्ज कर लेना सहज हो जाता है। बाबा कहे यह संगम का समय बहुत वैल्युबुल है, इसे व्यर्थ गंवायेंगे तो यह फिर से आने वाला नहीं है। इसलिए बाबा कहते यह स्लोगन हमेशा याद रखो ''अब नहीं तो कब नहीं।'' जो करना है वो अब कर लो...। क्योंकि अन्त समय है, इसे अच्छा बनाओ तो फिर आदि से लेके अन्त तक श्रेष्ठ ही रहेंगे। और यहाँ तो अचानक का पेपर होना है, कब किसका अन्त हो पता नहीं, तो एवररेडी रहना आवश्यक है।

समस्या से डरो नहीं, समस्यायें ही तो हमारा पेपर हैं। जितना हम आगे जाते हैं उतनी समस्यायें उस रूप से आयेंगी, यह पहले से ही बाबा ने सुनाया है कि माया आती रहेगी इसलिए इससे घबराना नहीं है। सागर है वहाँ लहरें तो आयेंगी। हमें उस लहर को पार करना है, मनोरंजन मनाना है। बाकी समस्या आवे ही नहीं, यह कैसे होगा? अरे! हम सर्वशक्तिवान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान हैं लेकिन हम मालिक बनके रहेंगे तो आर्डर माना जायेगा। मालिक ही नहीं बनेंगे तो शक्ति आर्डर क्यों मानेगी? मालिक अगर होशियार नहीं होता है तो सर्वेन्ट मालिक हो जाता है, मालिक सर्वेन्ट हो जाता है। तो आत्मा स्वरूप में मालिक नहीं बनते हैं तो यह छोटी-छोटी कर्मेन्द्रियाँ

हाथ-पाँव, ऑख, कान, मुख धोखा दे देते हैं। आत्मा की शक्ति के आगे यह मुख है क्या? लेकिन धोखा इसीलिए देते हैं क्योंकि हम मालिकपन को भूल जाते हैं। तो मैं आत्मा राजा हूँ स्व का, इन कर्मेन्द्रियों का। तो स्वराज्य अधिकारी बनकर पहले स्व पर राज्य करो। यहाँ प्रैक्टिस होगी तभी विश्व का राज्य कर सकेंगे। अगर यहाँ यह स्व का राज्य ही नहीं सम्भाल सकेंगे तो विश्व का राज्य क्या सम्भालेंगे? तो इसी निश्चय से अपने को बीच-बीच में चेक करो, चेन्ज करो। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

"साइलेन्स की शक्ति द्वारा सारे विश्व में शान्ति के वायब्रेशन फैलाओ"

हम सब ब्राह्मणों को सारे विश्व के अन्दर शान्ति के वायब्रेशन फैलाने हैं - इसके लिए विशेष अमृतवेले अपने मन के संकल्पों की स्थिति को सेट करो। जैसे तन के कारोबार की दिनचर्या सेट करते हैं वैसे संकल्प को भी अपने स्व स्थिति की सीट पर सेट करो। जब स्व का संकल्प फुल पीस में है तो हमारे शान्ति की पवित्र शक्ति चारों ओर फैलती है। इसी साइलेन्स के वायब्रेशन से विश्व में शान्ति की स्थापना होगी।

जैसे 18 जनवरी हमारा वर्ल्ड पीस डे कहलाता है - लेकिन यह एक दिन ही पीस डे नहीं, हमें तो रोज़ वर्ल्ड पीस की, बेहद सेवा की जवाबदारी है। हम सबका फर्स्ट उद्देश्य है कि अब सदाकाल के लिए विश्व में शान्ति हो, विश्व कल्याण हो। सर्व मनुष्य आत्मायें अपने मुक्ति जीवनमुक्ति की राह को प्राप्त करें। रावण का राज्य अब समाप्त हो। यह अशान्ति के संकल्प अर्थात् वायब्रेशन समाप्त हों। तो इस महायज्ञ में हम सभी अपने संकल्प विकल्पों की आहुति दें। लोगों को तो यह बोल कहने पड़ते कि विकारों की आहुति देनी है। हमें स्व को और सर्व को पीसफुल बनाना है। हमारी यह गुड विश हरेक के लिए हो कि तू सदा शान्ति की गोदी में समाये रहो और मैं भी सदा शान्ति की गोदी में समाया रहूँ। ऐसे पवित्र संकल्प सब में भरें अथवा खुद में हो। जब खुद के सब संकल्प कछुए की तरह समेट लेंगे तो एक मीठे बाबा की याद का संकल्प पावरफुल रहेगा। शान्ति की पीसफुल स्थिति का संकल्प रहेगा। जो हम सबका स्वधर्म है, स्वदेश है... यही हमें हरेक को दान देना है। अब समय है अपनी स्थिति को कर्मातीत बनाने का, विश्व कल्याण करने का, विश्व को पावन बनाने का, विश्व में शान्ति के, साइलेन्स के वायब्रेशन देने का।

सारी विश्व मौत की अथवा मुक्ति की गोद में जाने के लिए खड़ी है। दुनिया मौत कहती, हम मुक्ति कहते। साइंस ने प्रैक्टिकल में ऐसे-ऐसे शस्त्र तैयार किये हैं जो सेकण्ड में दुनिया काल की गोदी में चली जायेगी। सेकण्ड में सब आत्मायें उड़ जायेंगी। जब हम जानते हैं यह मुक्ति में जाने की तैयारी है तो पहले से ही हम अपनी मुक्त स्थिति का अनुभव क्यों नहीं करते। हमारी दिल तो सदा यही कहती कि हम अन्त में कर्मातीत होंगे तो क्या फायदा! उसका जो मजा है, पीस, प्रासपर्टी का, इन्द्रिय जीत का, शुभ संकल्पों का, मीठी-मीठी आत्मिक स्थिति का, संकल्प जीत, वायब्रेशन जीत का जो आनन्द है उसका अनुभव स्वयं को सदा प्रत्यक्ष में हो। बाकी जो थोड़ा बहुत हिसाब-किताब होगा वह चुक्तू कर उड़ जायेंगे। उड़ गये फिर उसका वर्णन कौन करेगा। उस उड़ान का अनुभव तो इन्हीं घड़ियों में करना है क्योंकि अभी हम उस अवस्था को जानते हैं, उसका ज्ञान है, और देने वाले दाता को भी जानते हैं। हम हर आत्मा के भविष्य को जानते हैं और अपनी मीठी अतीन्द्रिय सुख की स्थिति को जानते हैं। तो जानने का अर्थ है अनुभव करना।

हम सब ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा हैं। हम प्रैक्टिकल में बाबा के लाडले बच्चे बने हैं तो क्यों न हम इस संगम की महान घड़ियों में महानता का अनुभव करें। कहावत है गुड़ कितना मीठा है उसका वर्णन गूंगा क्या करे। परन्तु हमारा वर्णन तो प्रैक्टिकल अनुभव का है, कोई कहने मात्र का नहीं। तो जो हम वर्णन करते हैं उसी का हम स्वरूप बन जायें।

तो आज हम सब स्वयं ही स्वयं से दृढ संकल्प करें कि हमें विश्व को शान्ति का दान देना है। सदा शक्तिशाली श्रेष्ठ संकल्प में रहना है। अपनी पवित्र महान स्थिति बनाकर रखनी है। तो हर आत्मा इतनी पवित्र शुद्ध वृत्तियों में रहे - जिससे सारे विश्व में पवित्र शान्ति के वायब्रेशन फैलें। अब हमारी पढ़ाई ही है - अपनी वृत्ति वायब्रेशन से सारे विश्व को पावन बनाना। हमारा उद्देश्य ही है - अपनी स्वस्थिति से सारे विश्व में शान्ति की स्थापना करना। बाबा हम बच्चों को शुद्ध बनाकर, पावन बनाकर तत्वों को भी पावन बनाता है। तो आज से हरेक सदा मुक्त रहने का पुरूषार्थ करे, मुक्त स्थिति का अनुभव करे। इस देह के बन्धन से तो मैं आत्मा छूटी हुई पड़ी हूँ - बाकी निमित्त मात्र बेहद की सेवा के लिए यह शरीर है।

जैसे हमारे शुद्ध वायब्रेशन से बना हुआ अन्न मन पर प्रभाव डालता है, वैसे हमारी वृत्ति सारे दिन की दिनचर्या पर प्रभाव डालती है। तो आज से हम सब यह कंगन बांध लें कि मुझे स्व सहित सर्व में शान्ति के वायब्रेशन फैलाने हैं। शान्ति में रहना है। संकल्प भी साइलेन्स के वायब्रेशन का हो। यही हमारी सच्ची शुभ भावना हरेक के प्रति हो। यही सच्चा स्नेह है।

बाबा कहते अभी तुम्हें उड़ना है - तो हम उड़ तभी सकेंगे जब हमारे सभी संकल्प शीतल हों अर्थात् शान्त हो। अगर संकल्प ही व्यक्ति और वैभव में हैं तो वह उड़ने नहीं देंगे। तो हम सब अटेन्शन रखें कि हमें नीचे नहीं आना है। अटेन्शन से प्रैक्टिकल अनुभव भी कर सकेंगे। अच्छा – ओम् शान्ति।